INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

HPSC – HCS

HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक परीक्षा हेतु

भाग – 2

भारत का इतिहास और कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**HPSC-HCS (Haryana Public Service Commission – Haryana Civil Service) (प्रारंभिक परीक्षा हेतु)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **हरियाणा लोक सेवा आयोग (HPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**HPSC-HCS**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/ua8u6t

Online Order करें - http://surl.li/pclyv

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

	प्राचीन भारत का इतिहास	
क्र.सं.	अध्याय	पेज न.
1.	भारत के सांस्कृतिक आधार एवं सभ्यताएँ • सिन्धु घाटी सभ्यता • वैदिक काल • उत्तर वैदिक काल • छठी शताब्दी ई. पू. की श्रमण परम्परा	1
2.	प्राचीन और मध्यकाल में भारत के धार्मिक आंदोलन और धर्म दर्शन • आजीवक सम्प्रदाय • बौद्ध धर्म • जैन धर्म • प्रमुख धार्मिक विचारक	14
3.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियां • मौर्य वंश • कुषाण वंश • सातवाहन राजवंश • गुप्त वंश • चालुक्य वंश • पल्लव वंश • चोल वंश	30
4.	प्राचीन भारत में प्रमुख कलाएँ और वास्तुकला • सिन्धु घाटी सभ्यता से ब्रिटिश काल तक की कलाएं • भारतीय चित्रकला	56

	• भारतीय नृत्य कलाएं	
5.	प्राचीन भारत में भाषा और साहित्य का विकास • प्राचीन भारतीय साहित्य • संस्कृत, प्राकृत एवं तमिल • प्रमुख साहित्यिक रचनायें	83
	मध्यकालीन भारत	
1.	भारत में अरब आक्रमण	98
2.	सल्तनत काल के प्रमुख राजवंश • बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य	101
3.	मुग़ल वंश / मुग़ल साम्राज्य	115
4.	मध्यकाल में प्रमुख कलाएँ और स्थापत्य वास्तुकला • चित्रकला एवं संगीत का विकास	120
5.	भक्ति तथा सूफी आंदोलन • भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत • सूफी आंदोलन • धार्मिक एवं साहित्यिक योगदान	128
	आधुनिक भारत का इतिहास	
1.	आधुनिक भारत का विकास • यूरोपीय कम्पनियों का आगमन • बंगाल में ब्रिटिश फैक्ट्रियों की स्थापना • मुग़ल साम्राज्य का पतन • मराठा साम्राज्य • गवर्नर, गवर्नर जनरल & वायसराय एवं उनके कार्य	133

2.	राष्ट्रवाद का उदय • 1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह • 1857 की क्रांति • भारत में पश्चिमी शिक्षा का उदय • राजनीतिक-धार्मिक आंदोलन फकीर विद्रोह	154
3.	स्वतंत्रता संघर्ष भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन • राष्ट्रीय आंदोलन के उदय के कारण • कांग्रेस की स्थापना • नरमपंथी / उदारवादी चरण / उग्रवादी आंदोलन • उग्रवादी आंदोलन • गाँधी वाद • महत्वपूर्ण व्यक्तित्व	177
4.	स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्र निर्माण और पुनर्गठन • 1945 -1947 के बीच का भारत • देशी रियासतों का एकीकरण • पुर्तगाली उपनिवेशों का विलय	225

अध्याय – 2
प्राचीन और मध्य काल में भारत के धार्मिक आंदोलन और धर्म दर्शन

- **नये धार्मिक विचार-**
  आजीवक सम्प्रदाय
- आजीवक या आजीविक सम्प्रदाय दुनिया की प्राचीन दर्शन परम्परा में भारतीय जमीन पर विकसित प्रथम नास्तिकवादी या भौतिक वादी सम्प्रदाय था ।
- इसकी स्थापना मक्खलिपुत्र गोशाल द्वारा की गयी थी ।
- ऐसा माना जाता है कि मक्खलिपुत्र गोशाल पहले महावीर के शिष्य थे, किन्तु बाद में मतभेद हो जाने पर उन्होंने महावीर का साथ छोड़ दिया तथा आजीवक नामक स्वतंत्र सम्प्रदाय की स्थापना की ।
- आजीवक सम्प्रदाय लगभग 1002 ई. तक बना रहा।
- इनका मत नियतिवाद या भाग्यवाद पर आधारित था । जिसके अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तु भाग्य द्वारा पूर्व नियंत्रित एवं संचालित होती है ।
- इनके अनुसार मनुष्य के जीवन पर उसके कर्मों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।
- महावीर के समान गोशाल भि ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करते थे । तथा जीव और पदार्थ को अलग-अलग तत्व मानते थे ।
- इस सम्प्रदाय के स्वयं के कोई ग्रंथ या अभिलेख वर्तमान में प्राप्त नहीं हैं ।
- इस सम्प्रदाय का उल्लेख तत्कालीन धर्मग्रंथों तथा अशोक के अभिलेखों के आलावा मध्यकाल के स्त्रोतों तक में मिलता है ।
- ऐसा माना जाता है कि आजीवक सम्प्रदाय के अनुयायी (आजीवक श्रमण) नग्न रहते थे तथा परिव्राजकों अर्थात् सन्यासियों की भांति घूमते थे । ईश्वर पुनर्जन्म और कर्म अर्थात् कर्मकाण्ड में इनका विश्वास नहीं था ।
- ये जाति व्यवस्था के घोर विरोधी थे और समानता पर जोर देते थे ।
- आजीवक सम्प्रदाय का तत्कालीन जनमानस और राज्यसत्ता पर काफी गहरा प्रभाव था ।
- अशोक और उसके पोते दशरथ नए बिहार के जहानाबाद (पुराना "गया", जिला) स्थित बराबर की पहाड़ियों में सात गुफाओं का निर्माण कर उन्हें आजीवकों को समर्पित किया था ।

जैन व बौद्ध धर्म

उदय के कारण→

- छठी शताब्दी ई.पू. में वैदिक संस्कृति कर्मकाण्डों व आडम्बरों से ग्रसित हो गई।
- परिणाम सामाजिक कुरीतियां
- समाज में ऊँच-नीच जात-पात का भेदभाव बढ़ने लगा।
- जनता में असंतोष बढ़ा ।
- **मध्य गंगा घाटी में** इसी समय 62 सम्प्रदायों का उदय हुआ । उनमें **जैन और बौद्ध** सम्प्रदाय प्रमुख थे ।

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के **संस्थापक गौतम बुद्ध थे ।**
  सिद्धार्थ-बचपन का नाम - सिद्धि प्राप्त करने के लिए जन्म लेने वाला ।
- जन्म 563 ई.पू. - लुम्बिनी (नेपाल)
- कुल- शाक्य (क्षत्रिय कुल)
- बुद्ध की माता – महामाया
- बुद्ध की माता की मृत्यु के बाद पालन पोषण महाप्रजापति गौतमी ने किया था ।
- पिता – शुद्धोधन
- बुद्ध का विवाह - यशोधरा से
  बुद्ध के पुत्र का नाम राहुल था ।

महाभिनिष्क्रमण

- 29 वर्ष की आयु में
- सांसारिक जीवन का त्याग कर दिया था ।
- अनोमा नदी के तट पर सिर मुण्डन
- काषाय वस्त्र धारण किये ।
- प्रथम गुरु आलार कलाम थे ।
- सांख्य दर्शन के आचार्य
- बाद में उरुवेला (बोधगया) प्रस्थान
- यहाँ पांच साधक मिले ।
- इनमें कौण्डिय प्रमुख थे ।

ज्ञान प्राप्ति –

- 35 वर्ष की आयु में – बोधगया में ज्ञान की प्राप्ति हुई ।
- **वैशाख पूर्णिमा को पीपल के वृक्ष के नीचे निरंजना नदी (पुनपुन) के तट पर ज्ञान की प्राप्ति हुई।**
- इसी दिन से **गौतम बुद्ध तथागत** कहलाये तथा गौतम बुद्ध नाम भी यहीं से हुआ।
  जिसने सत्य को प्राप्त कर लिया।
  धर्मचक्र प्रवर्तन- सारनाथ में
- बोधगया से सारनाथ आये
- प्रथम उपदेश दिया-5 ब्राह्मण सन्यासियों को मागधी भाषा में ।
- गौतम बुद्ध का बौद्ध संघ में प्रवेश हुआ ।
- सर्वप्रथम अनुयायी –
  तपस्स जाट शुद्र
  कालिक }
- प्रिय शिष्य- आनन्द

बौद्ध धर्म की प्रथम महिला भिक्षु - गौतमी (बुद्ध की मौसी)

अन्तिम उपदेश

- **कुशीनारा में** सुभच्छ को दिया
- हिरण्यवती नदी तट पर

महापरिनिर्वाण (मृत्यु)

- कुशीनारा में 483 ई.पू.
- 80 वर्ष की आयु में
- बुद्ध के अवशेष **8 भागों में** डाले गये जहां स्तूप बनाये गये।

वैशाख पूर्णिमा का महत्व

- वैशाख पूर्णिमा को **बुद्ध पूर्णिमा** भी कहते हैं।
- गौतम बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति
- महापरिनिर्वाण - वैशाख पूर्णिमा को
  अपवाद-महाभिनिष्क्रमण
- गौतम बुद्ध में 32 महापुरुषों के लक्षण बताये गये है।

बुद्ध के प्रमुख वचन

- जीवन कष्टों से भरा है।
- लिप्सा तृष्णा का ही दूसरा रूप है।

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न

- **बुद्ध, धम्म, संघ**

बुद्ध के चार आर्य सत्य

1. दुःख
2. दुःख समुदाय
3. दुःख निरोध (निवारण)
4. प्रतिपदा

- इन्हीं का कालान्तर में विस्तार होकर ये **अष्टांगिक मार्ग कहलाये।**
- भिक्षुओं का कल्याण मित्र

अष्टांगिक मार्ग

1. सम्यक दृष्टि
2. सम्यक संकल्प
3. सम्यक वाणी
4. सम्यक कर्मान्त
5. सम्यक आजीव
6. सम्यक व्यायाम
7. सम्यक स्मृति
8. सम्यक समाधि

- समाधि मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति।
- जीवन-मरण चक्र से मुक्ति

बौद्ध धर्म

- अनीश्वरवादी
- पुनर्जन्म में विश्वास
- अनात्मवादी धर्म

बौद्ध धर्म के प्रतीक

जन्म -	कमल व साण्ड
गृहत्याग -	घोड़ा
ज्ञान -	पीपल
निर्वाण -	पदचिन्ह
मृत्यु -	स्तूप

- बौद्ध धर्म का सर्वाधिक विस्तार कोशल राज्य में।
- **बौद्ध धर्म के सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिये गये।**
- बौद्ध धर्म के प्रचार केन्द्र - मगध

बौद्ध संगीतियां

1. 483 ई.पू. संरक्षक शासनकाल में अजातशत्रु के राजगृह में रचना रची गयी।
   सुत्तपिटक (बुद्ध के उपदेश) विनयपिटक (संघ के नियम)
   अध्यक्ष – महाकस्सप
2. 383 ई.पू. संरक्षक - कालाशोक
   वैशाली में - भिक्षुओं में मतभेद
   अध्यक्ष – सर्वकामिनी
3. 250 / 251 ई.पू. संरक्षक शासनकाल में - अशोक
   पाटलिपुत्र में रचना रची गयी
   अभिधम्मपिटक
   (बुद्ध के दार्शनिक विचार)
   अध्यक्ष – मोग्गलिपुत्त तिस्स
4. प्रथम शताब्दी संरक्षक - कनिष्क
   कुण्डलवन में (कश्मीर) हीनयान व महायान (सम्प्रदाय में बंटा)
   अध्यक्ष – वसुमित्र

- विहार - बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान
- चैत्य - पूजास्थल

बौद्ध धर्म को अपनाने वाले प्रमुख शासक

- बिम्बिसार - बुद्ध का मित्र
- प्रसेनजीत
- उदायिन
- अशोक – महेन्द्र (पुत्र), संघमित्रा(पुत्री)
- बौद्ध धर्म का प्रचार करने श्रीलंका गये।

नालन्दा विश्वविद्यालय

- **गुप्त शासक कुमारगुप्त ने बौद्ध धर्म की शिक्षा के लिए स्थापित किया।**
- बौद्ध धर्म का अध्ययन करने हेतु आये।
- फाह्यान, ह्वेनसांग (चीनी यात्री)।
- अजातशत्रु प्रारम्भ में जैनधर्म का अनुयायी था बाद में बौद्ध धर्म का अनुयायी बना।

बौद्ध धर्म की प्रमुख महिला अनुयायी

- गौतमी
- नंदा
- मल्लिका
- खेमा
- विशाखा
- यशोधरा
- आम्रपाली
- सुप्रवासा

बौद्ध धर्म के प्रतीक महात्मा बुद्ध के प्रमुख आठ स्थान

- लुम्बिनी
- बोधगया
- सारनाथ

- **24वें-तीर्थंकर वर्धमान महावीर** थे ।
- जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक महावीर स्वामी ।
- जन्म 540 ई.पू. कुण्डग्राम में ।
- बचपन का नाम वर्धमान
- पिता- सिद्धार्थ
- माता – त्रिशला
- पत्नी – यशोदा
- पुत्री – प्रियदर्शना (अणोज्जा)
- दामाद – जमालि
- गृहत्याग 30 वर्ष की आयु में
- ज्ञान प्राप्ति 42 वर्ष की आयु में **ज्रम्भिक ग्राम** में ऋजुपालिका नदी के किनारे साल वृक्ष के नीचे उन्हें **कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई** ।
- उपदेश- अर्द्ध-मागधी भाषा में
- प्रथम उपदेश राजगृह में
- प्रथम शिष्य- जमालि
- चम्पा नरेश दधिवाहन की पुत्री चन्दना प्रथम भिक्षुणी थी ।
- महावीर स्वामी की मृत्यु 468 ई.पू. पावापुरी बिहार में
- महावीर शिक्षा प्राकृत भाषा में देते थे ।

जैन धर्म के पंच महाव्रत

1. सत्य वचन
2. अस्तेय (चोरी मत करो)
3. अंहिसा
4. अपरिग्रह (धन संचय मत करो)
5. ब्रह्मचर्य

त्रिरत्न (मोक्ष प्राप्ति के साधन)

- **सम्यक ज्ञान**
- **सम्य दर्शन**
- **सम्यक चरित्र**

- जैनधर्म में पुनर्जन्म में विश्वास तथा कर्मवाद में विश्वास पर बल

<u>संघ</u>

- महावीर ने एक संघ की स्थापना की ।
- इस संघ के **11 अनुयायी** बने जो **गणधर** कहलाये।
- 11 में से 10 महावीर की मृत्यु होने से पहले मोक्ष प्राप्त कर चुके थे।

  एक ही जीवित था - सुधर्मण

<u>जैन संगीतियां (सभायें)</u>

प्रथम- 300 ई.पू.

- पाटलिपुत्र में
- चन्द्रगुप्त मौर्य (संरक्षक)
- अध्यक्ष – स्थूलभद्र
- जैन धर्म दो भागों में विभाजित
- **श्वेताम्बर** - सफेद कपड़े वाले
- **दिगम्बर** - नग्न रहने वाले

- 12 अंगों का संकलन किया गया था ।

द्वितीय - 512 ई.पू. /513/526 ई.पू.

- वल्लभी में
- क्षमाश्रवण (संरक्षक)
- जैन ग्रंथों का अन्तिम रूप से संकलन
- मुख्य बिंदु कुल 11 अंगों को लिपिबद्ध किया गया ।

- **जैन धर्म का सबसे बड़ा केन्द्र चम्पानगरी**
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने कर्नाटक में जैन धर्म का विस्तार किया।
- **चन्दना प्रथम जैन महिला भिक्षुणी**
- हाथी गुम्फा अभिलेख (खारवेल)

  प्रारम्भिक जैन अवशेष
- महावीर के अनुयायियों को मूलतः निग्रंथ कहा जाता था ।
- दो जैन तीर्थंकरों ऋषभदेव एवं अरिष्टनेमी के नामों का उल्लेख ऋगवेद में मिलता है । अरिष्टनेमी को भगवान कृष्ण का निकट संबंधी माना जाता है ।
- जैन धर्म दो भागों में बंटा हुआ है ।
- श्वेताम्बर एवं दिगम्बर
- श्वेताम्बर (श्वेत वस्त्र धारण करने वाले स्थूलभद्र के शिष्य कहलाये)
- दिगम्बर (नग्न रहने वाले भद्रबाहु के शिष्य कहलाये)
- जैनधर्म में ईश्वर की मान्यता नहीं है । जैन धर्म में आत्मा की मान्यता है ।
- जैनधर्म ने अपने आध्यात्मिक विचारों को सांख्य दर्शन से ग्रहण किया ।
- मैसूर के गंग वंश के मंत्री, चामुंड के प्रोत्साहन से कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में 10 वी. शताब्दी के मध्य भाग में विशाल बाहुबली की मूर्ति गोमतेश्वर की मूर्ति का निर्माण किया गया गोमतेश्वर की प्रतिमा कायोत्सर्ग मुद्रा में है । यह मूर्ति 18 मी. ऊँची है एवं एक ही चट्टान को कटकर बनाई गई है ।
- खजुराहों में जैन मंदिरों का निर्माण चंदेल शासकों द्वारा किया गया ।
- मौर्योत्तर युग में मथुरा जैन धर्म का प्रसिद्ध केन्द्र था । मथुरा कला का संबंध जैनधर्म से था।
- जैनधर्म तीर्थंकरों की जीवनी भद्रबाहु द्वारा रचित कल्पसूत्र में है ।
- 72 वर्ष की आयु में महावीर की मृत्यु (निर्वाण)468 ईसा पूर्व में बिहार राज्य के पावापुरी (राजगीर)में हुई थी ।
- जैन धर्म का प्रतीक चिन्ह सांड है ।
- पार्श्वनाथ का प्रतीक चिन्ह सर्प है ।
- महावीर स्वामी का प्रतीक चिन्ह सिंह है ।
- स्यादवाद सप्तभंगी ज्ञान को कहते हैं ।
- जैन संघ को महासभा कहा जाता था ।
- जैन धर्म का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ कल्पसूत्र संस्कृत भाषा में लिखा गया है ।
- जैनधर्म के अनुसार ज्ञान पांच प्रकार का होता है । मति , श्रुति , अवधि , मनःपर्याय , कैवल्य ।
- जैन धर्म के दो प्रकार के शील व्रत है । (1) गुणव्रत (2) शिक्षाव्रत
- ज्ञान प्राप्ति के बाद महावीर स्वामी ने पावापुरी में जैनसंघ की स्थापना की थी ।

अध्याय – 4
प्राचीन भारत में प्रमुख कलाएँ और वास्तुकला

- ***सिन्धु घाटी सभ्यता से ब्रिटिश काल तक की कलाएं***
नदी की घाटी में कला का उद्भव ईसा पूर्व तीसरी सह शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ था। इस सभ्यता के विभिन्न स्थलों से कला के जो रूप प्राप्त हुए हैं, उनमें प्रतिमाएँ, मुहरें, मिट्टी के बर्तन, आभूषण, पकी हुई मिट्टी की मूर्तियाँ आदि शामिल हैं। उस समय के कलाकारों में निश्चित रूप से उच्च कोटि की कलात्मक सूझ-बूझ और कल्पनाशक्ति विद्यमान थी।
सिन्धु घाटी सभ्यता के दो प्रमुख स्थल हड़प्पा और मोहनजोदड़ों *नामक दो नगर थे, जिनमें से हड़प्पा उत्तर में और मोहनजोदड़ों दक्षिण में सिन्धु नदी के तट पर बसे हुये थे। ये दोनों नगर सुंदर नगर नियोजन की कला के प्राचीनतम उदाहरण थे।*
इन नगरों में रहने के मकान, बाजार, भंडार घर, कार्यालय, सार्वजनिक स्नानागार आदि सभी अत्यंत व्यवस्थित रूप से यथास्थान बनाए गए थे। इन नगरों में जल निकासी की व्यवस्था भी काफी विकसित थी। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों इस समय पाकिस्तान में स्थित हैं।
कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण स्थलों से भी हमें कला-वस्तुओं के नमूने मिले हैं, जिनके नाम हैं- लोथल और धौलावीरा (गुजरात), राखीगढ़ी (हरियाणा), रोपड़ (पंजाब) तथा कालीबंगा (राजस्थान)।

पत्थर की मूर्तियाँ

- *हड़प्पाई स्थलों पर पाई गईं मूर्तियाँ, भले ही वे पत्थर, कांसे या मिट्टी की बनी हों, संख्या की दृष्टि से बहुत अधिक नहीं हैं पर कला की दृष्टि से उच्च कोटि की हैं। हड़प्पा और मोहनजोदड़ों में पाई गई*
- *पत्थर की मूर्तियाँ त्रि-आयामी वस्तुएं बनाने का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। पत्थर की मूर्तियों में दो पुरुष प्रतिमाएं बहुचर्चित हैं, जिनमें से एक पुरुष धड़ है, जो लाल चूना पत्थर का बना है और दूसरी दाढ़ी वाले पुरुष की आवक्ष मूर्ति है, जो सेलखड़ी की बनी है।*
- *दाढ़ी वाले पुरुष को धार्मिक व्यक्ति माना जाता है। इस आवक्ष एक मूर्ति को शॉल ओढ़े हुए दिखाया गया है। शॉल बाएं कंधे के ऊपर से और दाहिनी भुजा के नीचे से डाली गई है। शॉल त्रिफुलिया नमूनों से सजी हुई है। आँखें कुछ लंबी और आधी बंद दिखाई गई हैं, मानों वह पुरुष ध्यानावस्थित हो।*
- *कान सीप जैसे दिखाई देते हैं और उनके बीच में छेद हैं। बालों को बीच की मांग के द्वारा दो हिस्सों में बाँटा गया है और सिर के चारों ओर एक सादा बना हुआ फीता बंधा हुआ दिखाया गया है। दाहिनी भुजा पर एक बाजूबंद है और गर्दन के चारों ओर छोटे-छोटे छेद बने हैं जिससे लगता है कि वह हार पहने हुए है ।*

कांसे की ढलाई

- *हड़प्पा के लोग कांसे की ढलाई बड़े पैमाने पर करते थे और इस काम में प्रवीण थे। इनकी कांस्य मूर्तियाँ कांसे को ढालकर बनाई जाती थी। इस तकनीक के अंतर्गत सर्वप्रथम मोम की एक प्रतिमा या मूर्ति बनाई जाती थी।*
- *इसे चिकनी मिट्टी से पूरी तरह लीपकर सूखने के लिए छोड़ दिया जाता था। जब वह पूरी तरह सूख जाती थी तो उसे गर्म किया जाता था और उसके मिट्टी के आवरण में एक छोटा सा छेद बनाकर उस छेद के रास्ते सारा पिघला हुआ मोम बाहर निकाल दिया जाता था ।*
- *इसके बाद चिकनी मिट्टी के खाली सांचे में उसी छेद के रास्ते पिघली हुई धातु भर दी जाती थी। जब वह धातु ठंडी होकर ठोस हो जाती थी तो चिकनी मिट्टी के आवरण को हटा दिया जाता था।*
- *कांस्य में मनुष्यों और जानवरों दोनों की ही मूर्तियाँ बनाई गई हैं।* ***मानव मूर्तियों का सर्वोत्तम नमूना है एक लड़की की मूर्ति, जिसे नर्तकी के रूप में जाना जाता है।*** *कांसे की बनी हुई जानवरों की मूर्तियों में भैंस और बकरी की मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। भैंस का सिर और कमर ऊँची उठी हुई है तथा सींग फैले हुए हैं।* ***सिन्धु सभ्यता के सभी केंद्रों में कांसे की ढलाई का काम बहुतायत में होता था।***

मृणमूर्तियाँ (टेराकोटा)

- *सिन्धु घाटी के लोग मिट्टी की मूर्तियाँ भी बनाते थे लेकिन वे पत्थर और कांसे की मूर्तियों जितनी बढ़िया नहीं होती थीं। सिन्धु घाटी की मूर्तियों में* ***मातृदेवी की प्रतिमाएं अधिक*** *उल्लेखलीय हैं।*
- *कालीबंगा और लोथल में पाई गई नारी मूर्तियाँ हड़प्पा और मोहनजोदड़ों में पाई गई मातृदेवी की मूर्तियों से बहुत ही अलग तरह की हैं। मिट्टी की मूर्तियों में कुछ दाढ़ी-मूँछ वाले ऐसे पुरुषों की भी छोटी-छोटी मूर्तियाँ पाई गई हैं, जिनके बाल गुंथे हुए (कुंडलित) हैं, जो एकदम सीधे खड़े हुए हैं, टांगें थोड़ी चौड़ी हैं और भुजाएं शरीर के समानांतर नीचे की ओर लटकी हुई हैं।*
- *ठीक ऐसी ही मुद्रा में मूर्तियाँ बार-बार पाई गईं हैं, जिससे यह प्रतीत होता है कि ये किसी देवता की मूर्तियाँ हैं। एक सींग वाले देवता का मिट्टी का बना मुखौटा भी मिला है। इनके अलावा, मिट्टी की बनी पहिएदार गाड़ियाँ, छकड़े, सीटियाँ, पशु-पक्षियों की आकृतियाँ, खेलने के पासे, गिट्टियाँ, चक्रिका (डिस्क) भी मिली हैं।*

मुद्राएँ (मुहरें)

- *पुरातत्वविदों को हज़ारों की संख्या में मुहरें (मुद्राएं) मिली हैं, जो आमतौर पर सेलखड़ी और कभी-कभी गोमेद,*

चकमक पत्थर, तांबा, कांस्य और मिट्टी से बनाई गई थीं। उन पर एक सींग वाले साँड़, गैंडा, बाघ, हाथी, जंगली भैंसा, बकरा, भैंसा आदि पशुओं की सुंदर आकृतियाँ बनी हुई थीं।

- इन आकृतियों में प्रदर्शित विभिन्न स्वाभाविक मनोभावों की अभिव्यक्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन मुद्राओं को तैयार करने का **उद्देश्य मुख्यतः वाणिज्यिक था।** ऐसा प्रतीत होता है कि ये मुद्राएं बाजूबंद के तौर पर भी कुछ लोगों द्वारा पहनी जाती थीं जिनसे उन व्यक्तियों की पहचान की जा सकती थी, । जैसे कि आजकल लोग पहचान पत्र धारण करते हैं।
- हड़प्पा की मानक मुद्रा 2x2 इंच की वर्गाकार पटिया होती थी, जो आमतौर पर सेलखड़ी से बनाई जाती थी। प्रत्येक मुद्रा में एक चित्रात्मक लिपि खुदी होती थी जो अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है। कुछ मुद्राएँ हाथीदांत की भी पाई गई हैं।
- मुद्राओं के डिज़ाइन अनेक प्रकार के होते थे पर अधिकांश में कोई जानवर, जैसे कि कूबड़दार या बिना कूबड़ वाला साँड़, हाथी, बाघ, बकरे और दैत्याकार जानवर बने होते हैं।
- उनमें कहीं-कहीं पेड़ों और मानवों की आकृतियाँ भी बनी पाई गई हैं। इनमें **सबसे अधिक उल्लेखनीय एक ऐसी मुद्रा है जिसके केंद्र में एक मानव आकृति और उसके चारों ओर कई जानवर बने हैं।** इस मुद्रा को कुछ विद्वानों द्वारा **पशुपति मुद्रा कहा जाता है** (आकार 1/2 से 2 इंच तक के वर्ग या आयत के रूप में) जबकि कुछ अन्य इसे किसी देवी की आकृति मानते हैं। इस मुद्रा में एक मानव आकृति पालथी मारकर बैठी हुई दिखाई गई है।
- इस मानव आकृति के दाहिनी ओर एक हाथी और एक बाघ (शेर) है जबकि बाँयी ओर एक गैंडा और भैंसा दिखाए गए हैं। इन पशुओं के अलावा, स्टूल के नीचे दो बारहसिंगे हैं। इस तरह की मुद्राएं 2500-1900 ई. पू. की हैं और ये सिन्धु घाटी के प्राचीन नगर मोहनजोदड़ो जैसे अनेक पुरास्थलों पर बड़ी संख्या में पाई गई हैं। इनकी सतहों पर मानव और पशु आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं।
- इन मुद्राओं के अलावा, तांबे की वर्गाकार या आयताकार पट्टियाँ (टैबलेट) पाई गई हैं, जिनमें एक ओर मानव आकृति और दूसरी ओर कोई अभिलेख अथवा दोनों ओर ही कोई अभिलेख है। इन पट्टियों पर आकृतियाँ और अभिलेख किसी नोकदार औजार (छेनी) से सावधानीपूर्वक काटकर अंकित किए गए हैं। मृद्भाण्ड
- इन पुरास्थलों से बड़ी संख्या में प्राप्त मृद्भाण्डों (मिट्टी के बर्तनों) की शक्ल सूरत तथा उन्हें बनाने की शैलियों से हमें तत्कालीन डिज़ाइनों के भिन्न-भिन्न रूपों तथा विषयों के विकास का पता चलता है।
- **सिन्धु घाटी में पाए गए मिट्टी के बर्तन** अधिकतर कुम्हार की चाक पर बनाए गए बर्तन हैं, हाथ से बनाए गए बर्तन नहीं।
- इनमें रंग किए हुए बर्तन कम और सादे बर्तन अधिक हैं। ये सादे बर्तन आमतौर पर लाल चिकनी मिट्टी के बने हैं। इनमें से कुछ पर सुंदर लाल या स्लेटी लेप लगी है। कुछ घुंडीदार पात्र हैं, जो घुंडियों की पंक्तियों से सजे हैं।
- काले रंगीन बर्तनों पर लाल लेप की एक सुंदर परत है, जिस पर चमकीले काले रंग से ज्यामितीय आकृतियाँ और पशुओं के डिज़ाइन बने हैं।
- बहुरंगी मृद्भाण्ड बहुत कम पाए गए हैं। इनमें मुख्यतः छोटे-छोटे कलश शामिल हैं जिन पर लाल, काले, हरे और कभी-कभार सफ़ेद तथा पीले रंगों में ज्यामितीय आकृतियाँ बनी हुई हैं। उत्कीर्णित बर्तन भी बहुत कम पाए गए हैं, और जो पाए गए हैं उनमें उत्कीर्णन की सजावट पेंदे पर और बलि-स्तंभ की तश्तरियों तक ही सीमित थी।

आभूषण-

- हड़प्पा के पुरुष और स्त्रियां अपने आपको तरह-तरह के आभूषणों से सजाते थे। ये **गहने बहुमूल्य धातुओं और रत्नों से लेकर हड्डी और पकी हुई मिट्टी तक के बने होते थे।**
- गले के हार, फीते, बाजूबंद और अंगूठियाँ आमतौर पर पुरुषों और स्त्रियों दोनों के द्वारा समान रूप से पहनी जाती थीं, पर करधनियाँ, बुंदे (कर्णफूल) और पैरों के कड़े या पैंजनियाँ स्त्रियाँ ही पहना करती थीं। मोहनजोदड़ो और लोथल से ढेरों गहने मिले हैं, जिनमें सोने और मूल्यवान नगो के हार, तांबे के कड़े और मनके, सोने के कुंडल, बुंदे/झुमके और शीर्ष 3 -आभूषण, लटकनें तथा बटने और सेलखड़ी के मनके तथा बहुमूल्य रत्न शामिल हैं।
- सभी आभूषणों को सुंदर ढंग से बनाया गया है। यह ध्यान देने वाली बात है कि **हरियाणा के फरमाना पुरास्थल पर एक कब्रिस्तान (शवाधान) पाया गया है, जहाँ शवों को गहनों के साथ दफनाया गया है।**
- चन्हुदड़ों और लोथल में पाई गई कार्यशालाओं से पता चलता है कि मनके बनाने का उद्योग काफी अधिक विकसित था। मनके कार्नीलियन, जमुनिया, सूर्यकांत, स्फटिक, कांचमणि, सेलखड़ी, फीरोज़ा, लाजवर्द मणि आदि के बने होते थे।
- इसके अलावा तांबा, कांसा और सोने जैसी धातुएँ और शंख-सीपियां और पकी मिट्टी भी मनके बनाने के काम में आती थीं। मनके तरह-तरह के रूप और आकार के होते थे— कोई तश्तरीनुमा बेलनाकार, गोल या ढोलकाकार होता था तो कोई कई खंडों में विभाजित कुछ मनके दो या अधिक पत्थरों के जोड़ से बने होते थे, कुछ पत्थर पर सोने का आवरण चढ़ा होता था, कुछ को काटकर या रंगकर सुंदर बनाया जाता था तो कुछ में तरह-तरह के नमूने खुदे होते थे।

हड़प्पा के लोग पशुओं, विशेष रूप से बंदरों और गिलहरियों के नमूने बनाते थे, जो एकदम असली जैसे दिखाई देते थे। इनका उपयोग पिन की नोक और मनकों के रूप में किया जाता था।

सिन्धु घाटी के घरों में बड़ी संख्या में तकुए और तकुआ चक्रिया भी मिली हैं, जिससे पता चलता है कि उन दिनों

मंदिर वास्तुकला

- मंदिर निर्माण की प्रक्रिया का आरंभ तो मौर्य काल से ही शुरू हो गया था किंतु आगे चलकर उसमें सुधार हुआ और गुप्त काल को मंदिरों की विशेषताओं से लैस देखा जाता है।
- संरचनात्मक मंदिरों के अलावा एक अन्य प्रकार के मंदिर थे जो **चट्टानों को काटकर** बनाए गए थे। इनमें प्रमुख है **महाबलिपुरम का रथ-मंडप जो 5वीं शताब्दी का है।**
- गुप्तकालीन मंदिर आकार में बेहद छोटे हैं । एक वर्गाकार चबूतरा (ईंट का) है जिस पर चढ़ने के लिये सीढ़ी है तथा बीच में चौकोर कोठरी है जो गर्भगृह का काम करती है।
- कोठरी की छत भी सपाट है व अलग से कोई प्रदक्षिणा पथ भी नहीं है।
- इस प्रारंभिक दौर के निम्नलिखित मंदिर हैं जो कि भारत के प्राचीनतम संरचनात्मक मंदिर हैं: तिगवा का विष्णु मंदिर (जबलपुर, मध्यप्रदेश), भूमरा का शिव मंदिर (सतना, मध्यप्रदेश), नचना कुठार का पार्वती मंदिर (पन्ना, मध्यप्रदेश), देवगढ़ का दशावतार मंदिर (ललितपुर, उत्तरप्रदेश), भीतरगाँव का मंदिर (कानपुर, उत्तरप्रदेश) आदि।
- मंदिर स्थापत्य संबंधी अन्य नाम, जैसे- पंचायतन, भूमि, विमान भद्रथ, कर्णरथ और प्रतिरथ आदि भी प्राचीन ग्रंथों में मिलते हैं।
- छठी शताब्दी ईस्वी तक उत्तर और दक्षिण भारत में मंदिर वास्तुकला शैली लगभग एकसमान थी, लेकिन छठी शताब्दी ई. के बाद प्रत्येक क्षेत्र का भिन्न-भिन्न दिशाओं में विकास हुआ
- आगे ब्राह्मण हिन्दू धर्म के मंदिरों के निर्माण में तीन प्रकार की शैलियों नागर, द्रविड़ और बेसर शैली का प्रयोग किया गया।

मंदिर स्थापत्य

नागर	द्रविड़	बेसर
पाल उपशैली	पल्लव उपशैली	राष्ट्रकूट
ओडिशा उपशैली	चोल उपशैली	चालुक्य
खजुराहो उपशैली	पाण्डय उपशैली	काकतीय
सोलंकी उपशैली	विजयनगर उपशैली	होयसल
	नायक उपशैली	

मंदिर	स्थल	कालखण्ड
गोलाकार ईंट व इमारती लकड़ी का मंदिर	बैराट जिला राजस्थान	तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व
साँची का मंदिर-40	साँची (मध्य प्रदेश)	तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व
साँची का मंदिर-18	साँची (मध्य प्रदेश)	द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व
प्राचीनतम संरचनात्मक मंदिर	ऐहोल (कर्नाटक)	चौथी शताब्दी ईसा पूर्व
साँची का मंदिर-17	साँची (मध्य प्रदेश)	चौथी सदी
लड़खन मंदिर	ऐहोल (कर्नाटक)	पाँचवीं सदी ईस्वी सन्
दुर्गा मंदिर	ऐहोल (कर्नाटक)	550 ईस्वी सन्

प्रश्न - निम्नलिखित सूर्य मंदिरों में कौनसा पाटन, गुजरात में स्थित है?

A. कोणार्क **B. मोढ़ेरा**
B. मार्तण्ड **D. दक्षिणार्क**

उत्तर - B

भारतीय मंदिरों के स्थापत्य की नागर, द्रविड़ और बेसर शैलियाँ

पूर्व मध्यकालीन शिल्पशास्त्रों में मंदिर स्थापत्य की तीन बड़ी शैलियाँ बताई गई हैं – नागर शैली, द्रविड़ शैली और वेसर शैली।

नागर शैली – नागर शैली का प्रचलन **हिमालय और विन्ध्य पहाड़ों के बीच** की धरती में पाया जाता है।

द्रविड़ शैली – द्रविड़ शैली **कृष्णा और कावेरी नदियों के बीच** की भूमि में अपनाई गई।

वेसर शैली – वेसर शैली **विन्ध्य पहाड़ों और कृष्णा नदी के बीच** के प्रदेश से संबंध रखती है।

नागर शैली

इस शैली के सबसे पुराने उदाहरण **गुप्तकालीन मंदिरों में,** विशेषकर, देवगढ़ के दशावतार मंदिर और भीतरगाँव के ईंट-निर्मित मंदिर में मिलते हैं।

नागर शैली की दो बड़ी विशेषताएँ हैं – इसकी **विशिष्ट योजना और विमान।**

1. इसकी मुख्य भूमि आयताकार होती है जिसमें बीच के दोनों ओर क्रमिक विमान होते हैं जिनके चलते इसका पूर्ण आकार तिकोना हो जाता है। यदि **दोनों पार्श्वों में एक-एक विमान होता है तो वह त्रिरथ** कहलाता है। दो-दो विमानों वाले मध्य भाग को **सप्तरथ** और चार-चार विमानों वाले भाग को **नवरथ** कहते हैं। ये विमान मध्य भाग्य से लेकर के मंदिर के अंतिम ऊँचाई तक बनाए जाते हैं।

उत्तर प्रदेश	डांगा, झीका, छाऊ, लुझरी, झोरा, कजरी, नौटंकी , थाली, जट्टा
केरल	भद्रकली , पायदानी , कुड़ीअट्टम , कालीअट्टम , मोहिनीअट्टम
पश्चिम बंगाल	करणकाठी , गम्भीरा , जलाया, बाउल नृत्य , कथि , जात्रा
नागालैण्ड	कुमीनागा , रेंगमनागा , लिम, चोंग, खेवा
मणिपुर	संकीर्तन , लाईहरीबा , थांगटा की तलम , बसन्तराम , राखाल
मिजोरम	चेरोकान , पाखुलिया नृत्य
झारखण्ड	सुआ , पंथी , राउत , कर्मा , फुलकी डोरला , सरहुल , पाइका , नटुआ , छऊ
ओडिशा	अग्नि , डंडानट , पैंका , जदूर , मुदारी , आया , सवारी , छाऊ
उत्तराखण्ड	चांचरी / झोड़ा , छपेली , छोलिया , झुमैलो , जागर , कुमायूँ नृत्य, चौफल , छोलिया
कर्नाटक	यक्षगान , भूतकोला , वीरगास्से , कोडावा
आन्ध्र प्रदेश	घण्टा मर्दाला , बतकम्मा , कुम्मी , छड़ी , सिद्धि माधुरी
छत्तीसगढ़	सुआ करमा , रहस , राउत , सरहुल , बार , नाचा , घसिया बाजा , पंथी
तमिलनाडु	कोलट्टम , कुम्मी कारागम्
अरुणाचल प्रदेश	युद्ध नृत्य, **लायन एंड पीक डांस, रिखमपाड़ा नृत्य, बुईआ नृत्य, खांपटी नृत्य, बारडो छम, तापु नृत्य, दामिंडा डांस, पोंग नृत्य,**

प्रसिद्ध वाद्य यंत्र एवं वादक

वाद्य यंत्र	वादक
बाँसुरी	हरिप्रसाद चौरसिया , रघुनाथ सेठ , पन्नालाल घोष , प्रकाश सक्सेना, देवेन्द्र मुक्तेश्वर, प्रकाश बढ़ेरा, राजेन्द्र प्रसन्ना
वायलिन	बालमुरली कृष्णन, गोविन्दस्वामी पिल्लई, टी एन कृष्णन, आर पी शास्त्री, संदीप ठाकुर, बी शशि कुमार, एन राजम
सरोद	अली अकबर खाँ , अलाउद्दीन खाँ, अशोक कुमार राय, अमजद अली खाँ
सितार	पं. रविशंकर, उस्ताद विलायत खाँ
शहनाई	बिस्मिल्ला खाँ, शैलेश भागवत, अनंत लाल, भोलानाथ तमन्ना, हरिसिंह
तबला	अल्ला रक्खा, जाकिर हुसैन, लतीफ खाँ, गुदई महाराज, अम्बिका प्रसाद
हारमोनियम	रवीन्द्र तालेगांवकर, अप्पा जुलगावकर, महमूद ब्रह्मस्वरूप सिंह , एस. बालचन्द्रन , असद अली , गोपालकृष्ण
वीणा	पं. शिवकुमार शर्मा, तरुण भट्टाचार्य
सारंगी	पं. रामनारायण, ध्रुव घोष , अरुण काले, आशिक अली खाँ, वजीर खाँ, रमजान खाँ
गिटार	विश्वमोहन भट्ट, ब्रजभूषण काबरा, केशव तालेगांवकर, नलिन मजूमदार

लोककला शैलियाँ

शैली	राज्य
रंगोली	महाराष्ट्र / गुजरात
अल्पना	पश्चिम बंगाल
मण्डाना , मेहँदी	राजस्थान
अरिपन, गोदना	बिहार
रंगवल्ली	कर्नाटक
ऐपण	उत्तराखंड
अदूपना	हिमाचल
चौक पूरना	उत्तर प्रदेश
कलमकारी, मुगगु	आंध्रप्रदेश
फुलकारी	हरियाणा
सथिया	गुजरात
कोल्लम	तमिलनाडु
कालम	केरल

वास्तुकला शैलियाँ

शैली	विशेषता	नमूने
नागर शैली	चतुर्भुजाकार भवन	सूर्य मन्दिर (कोणार्क), जगन्नाथ मन्दिर (पुरी), शैली भवन कन्दरिया महादेव मन्दिर (खजुराहो), दिलवाड़ा जैन मन्दिर (माउण्ट आबू)
द्रविड शैली	गोलाकार भवन	कैलाश मन्दिर (काँची), रथ मन्दिर (मामल्लापरम), शैली भवन वृहदेश्वर मन्दिर (तंजौर)
बेसर शैली	आयताकार भवन	कैलाश मन्दिर (एलोरा), दशावतार मंदिर (देवगढ़ शैली भवन झाँसी)

भारतीय चित्रकला

भारतीय चित्रकारी के प्रारंभिक उदाहरण प्रागैतिहासिक काल के हैं, जब मानव गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी किया करता था। भीमबेटका की गुफाओं में की गई चित्रकारी 5500 ई.पू. से भी ज्यादा पुरानी है। 7वीं शताब्दी में अजंता और एलोरा गुफाओं की चित्रकारी भारतीय चित्रकारी का सर्वोत्तम उदाहरण हैं।

भारतीय चित्रकारी में भारतीय संस्कृति की भांति ही प्राचीनकाल से लेकर आज तक एक विशेष प्रकार की एकता के दर्शन होते हैं। प्राचीन व मध्यकाल के दौरान भारतीय चित्रकारी मुख्य रूप से धार्मिक भावना से प्रेरित थी, लेकिन आधुनिक काल तक आते-आते यह काफी हद तक लौकिक

अध्याय – 2

राष्ट्रवाद का उदय

- **1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह**
  राजनीतिक – धार्मिक आंदोलन
  फकीर विद्रोह (1776-77)
- **यह विद्रोह बंगाल में विचरणशील मुसलमान धार्मिक फकीरों द्वारा किया गया था।** इस विद्रोह के नेता मजनू शाह ने अंग्रेजी सत्ता को चुनौती देते हुए जमींदारों और किसानों से धन इक्कठा करना आरम्भ कर दिया।
- मजनू शाह की मृत्यु के बाद चिराग अली शाह ने आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया। पठानों राजपूतों और सेना से निकाले गये भारतीय सैनिकों ने उनकि मदद की।
- **देवी चौधरानी और भवानी पाठक इस आंदोलन से जुड़े प्रसिद्ध हिन्दू नेता थे।**
  सन्यासी विद्रोह (1770 – 1820)
- **संन्यासी विद्रोह भारत की आज़ादी के लिए बंगाल में अंग्रेज़ हुकूमत के विरुद्ध किया गया।** एक प्रबल विद्रोह था। संन्यासियों में अधिकांश शंकराचार्य के अनुयायी थे।
- **इतिहास प्रसिद्ध इस विद्रोह की स्पष्ट जानकारी बंकिमचन्द्र चटर्जी के उपन्यास 'आनन्दमठ' में मिलती है।**
- बंगाल में अंग्रेज़ी हुकूमत के क़ायम होने पर जमींदार, कृषक, शिल्पकार सभी की स्थिति बद्तर हो गई थी।
- इसके अलावा बंगाल का 1770 ई. का भयानक अकाल तथा अंग्रेज़ी सरकार द्वारा इसके प्रति बरती गई उदासीनता इस विद्रोह का प्रमुख कारण थी।
- भारतीय जनता के तीर्थ स्थानों पर जाने पर लगे प्रतिबन्ध ने शान्त संन्यासियों को भी विद्रोह पर उतारू कर दिया। इन सभी तत्वों (जमींदार, कृषक, शिल्पी व संन्यासियों) ने मिलकर अंग्रेज़ी सरकार का विरोध किया।
- इस विद्रोह को कुचलने के लिए वारेन हेस्टिंग्स को कठोर कार्रवाई करनी पड़ी थी।

पागलपंथी विद्रोह

- उत्तर-पूर्वी भारत में प्रभावी **पागलपंथी एक धार्मिक पंथ था। उत्तर-पर्वी क्षेत्र में हिन्दू मुसलमान और गारो तथा जांग आदिवासी इस पंथ के समर्थक थे।**
- इस क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा क्रियान्वित भू-राजस्व तथा प्रशासनिक व्यवस्था के कारण व्यापक असंतोष था।
- इसके परिणामस्वरूप **1825 ई. में पागलपंथियों के नेता टीपू ने विद्रोह कर दिया।** यह विद्रोह लगभग दो दशकों तक चला। इस विद्रोह के दौरान टीपू इतना प्रभावशाली हो गया की उसने उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में औपनिवेशक प्रशासन के समान्तर एक ओर प्रशासनिक तंत्र का गठन कर लिया। इस विद्रोह को 1833 ई. में दबा दिया गया।

वहाबी आंदोलन (1830 – 70)

- वहाबी आंदोलन **मूलतः एक इस्लामिक सुधारवादी आंदोलन था।** जिसने **कालांतर में मुस्लिम समाज में व्याप्त अन्धविश्वास एवं कुरुतियों के उन्मूलन को अपना उद्देश्य बनाया।**
- इस आंदोलन के संस्थापक अब्दुल वहाबी के नाम पर इसका नाम वहाबी आंदोलन पड़ा।
- सैयद अहमद बरेलवी ने भारत में इस आंदोलन को प्रेरणा प्रदान की। इस आंदोलन के तहत सैयद अहमद ने सन 1830 में पेशावर पर नियंत्रण कर लिया और अपने नाम के सिक्के चलवाए। किन्तु 1831 में बालाकोट के युद्ध में इनकी मृत्यु हो गई।
- सैयद अहमद की अचानक मृत्यु के बाद वहाबी आंदोलन का मुख्य केन्द्र पटना हो गया इस आंदोलन की अनेक कमजोरियां थी जैसे साम्प्रदायिक उन्माद तथा धर्मांधता इसके बावजूद वहाबीयों ने हिन्दुओं का विरोध कभी नहीं किया।
- वहाबी आंदोलन भारत को अंग्रजों से मुक्त करना चाहता था। परन्तु **इस आंदोलन का उद्देश्य भारत के लिए स्वतंत्रता प्राप्त करना नहीं बल्कि मुस्लिम शासन की पुनस्थापना करना था।** 1870 के आस-पास अंग्रेजों ने इस आंदोलन का दमन कर दिया।

कूका विद्रोह

- कूका विद्रोह की शुरुआत पंजाब में 1860-1870 ई. में हुई थी। वहाबी विद्रोह की भांति 'कूका विद्रोह' का भी आरम्भिक स्वरूप धार्मिक था, किन्तु बाद में यह राजनीतिक विद्रोह के रूप में परिवर्तित हो गया।
- इसका सामान्य उद्देश्य अंग्रेज़ों को देश से बाहर निकालना था।
- **पश्चिमी पंजाब में 'कूका विद्रोह' की शुरुआत लगभग 1840 ई. में 'भगत जवाहर मल' द्वारा की गयी थी। भगत जवाहर मल को 'सियान साहब' के नाम से भी जाना जाता था।**
- प्रारम्भ में इस विद्रोह का उद्देश्य सिक्ख धर्म में प्रचलित बुराईयों को दूर कर इसे शुद्ध करना था।
- सियान साहब ने अपने शिष्य 'बालक सिंह' के साथ मिलकर अपने अनुयायियों का एक दल गठित किया।
- इस दल का मुख्यालय 'हजारा' में हुआ करता था। **इस विद्रोह के विरुद्ध अपनी दमनकारियों नीतियों को अपनाते हुये अंग्रेजों ने 1872 ई. में इसके एक नेता 'रामसिंह' को रंगून निर्वासित कर दिया** और आंदोलन पर नियंत्रण पा लिया गया।

अपदस्थ शासकों के आंदोलन
वेलुपंथी का विद्रोह :-

- **वेलुपंथी त्रावणकोर केरल का दीवान था।** पद से हटाये जाने और राज्य पर भारी वित्तीय बोझ डाले जाने के खिलाफ उसने विद्रोह कर दिया।

- अंग्रेजों से लड़ाई में वेलूपंथी घायल हो गया और जंगल की तरफ भाग गया जहाँ उसकी मृत्यु हो गई । **मरने के बाद अंग्रेजी सेना ने उसे सार्वजनिक रूप से फांसी पर लटका दिया ।**

विशाखापट्टनम का विद्रोह (1827 – 30)

- विशाखापट्टनम जिले में अपनी सम्पति जब्त कर लिए जाने तथा लगान का भुगतान ना किये जाने के कारण सरकार द्वारा कठोर तरीके अपनाये जाने के विरोध में स्थानीय जमीदारों ने सन् 1827- 30 के बीच अनेक विद्रोह किये कालांतर में सरकार ने इन सभी विद्रोह को दबा दिया ।

अपदस्त शासकों के आश्रितों का विद्रोह

समोसी विद्रोह

- समोसी मराठा राज्य के अधीनस्थ कर्मचारी थे जिन्होंने मराठा राज्य के पतन के उपरांत कृषि को रोजगार के रूप में अपना लिया ।
- अत्यधिक लगान वसूली के कारण 1822 में उन्होंने विद्रोह कर दिया ।
- इसी बीच सन् 1825 -26 में अकाल पड़ने के कारण उमा जी के नेतृत्व में उन्होंने पुनः विद्रोह किया ब्रिटिश सरकार ने उनके अपराधों को माफ़ कर दिया तथा भूमि अनुदान देने के साथ-साथ उन्हें पर्वतीय पुलिस में भर्ती किया ।

गडकरी विद्रोह

- गडकरी विद्रोह अंग्रेज़ों के ख़िलाफ किया गया था। **1844 ई. में महाराष्ट्र में 'गड़करी जाति' के विस्थापित सैनिकों ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध इस विद्रोह को अंजाम दिया।**
- गडकरियों ने 'सनमगढ़' तथा 'भूदरगढ़' के क़िलों को जीत लिया था। बाद के दिनों में अंग्रेज़ों ने इस विद्रोह को कुचल दिया, और क़िलों को फिर से प्राप्त कर लिया।

सावन्तवादी विद्रोह

प्रवासीवादी विद्रोह: प्रवासीवादी विद्रोह भारतीयों द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ शुरू किया गया था।

- प्रवासीवादी विद्रोह 1844 में हुआ था।
- प्रवासीवादी विद्रोह का नेतृत्व मराठा सरदार फोन्ड सावन्त ने किया था।
- सावंत के कुछ सरोकारों और देसिटीज़ की सहायता से देंक के कुछ किलों पर अधिकार कर लिया गया।
- बाद में अंग्रेजी सेना ने मुठभेड़ में विद्रोहियों को राष्ट्रस्त कर दिया।
- कई विद्रोही तो भाग गए और कुछ पकड़े गए विद्रोहियों पर देशद्रोह का मुकदमा चला गया।
- अंग्रेज सरकार प्रवासीवादी विद्रोह का दमन करने में कामयाब रही।

ब्रिटिश भारत में जनजातीय आंदोलन

- ब्रिटिश शासन की स्थापना के बाद लागू की गई भू-राजस्व तथा प्रशासनिक व्यवस्था ने कालीबाई तथा विभिन्न विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक व्यवस्थाओं को औपनिवेशक व्यवस्था में शामिल कर लिया ।
- इस नई व्यवस्था ने आदिवासीयों के शोषण का एक नया तंत्र स्थापित कर दिया जिसके कारण इन जनजातियों में जबरदस्त असंतोष फैला ।
- **औपनिवेशक अर्थव्यस्था ने अपने हित के उन्नयन के लिए जमीदारों तथा बिचोलिये वर्ग को बढ़ावा दिया ।**
- **इस वर्ग ने आदिवासियों को कर के जटिल ढाचें में उलझाकर उन्हें उनकी ही भूमि से बेदखल कर दिया ।** इससे वे औपनिवेशक शोषण के अंतहीन जाल में फँस गए।

जनजातीय आंदोलन का स्वरूप

- सभी जनजातीय अथवा आदिवासी आंदोलनों की प्रष्ठ भूमि एकसमान थी । किन्तु इन आं**दोलनों के समय तथा इनके द्वारा उठाये मुद्दों में पर्याप्त भिन्नता थी ।**
- कुँवर सुरेश सिंह ने इन आंदोलनों को तीन चरणों में विभाजित किया है।
- **प्रथम चरण -** 1795 से 1820 के बीच था । इस समय **अंग्रेजी शासन व्यवस्था युवावस्था की ओर बढ़ रही थी**
- **दूसरा चरण –** दूसरा चरण 1860 से 1920 तक रहा । इस चरण के दौरान **आदिवासी आंदोलनों की प्रवृत्ति अलगाववादी आंदोलनों की बजाय राष्ट्रवादी तथा कृषक आंदोलनों में भाग लेने की रही ।** इसके अलावा दोनों चरणों में भिन्नता रही थी

मुंडा एवं हो विद्रोह (1820-22)

- यह छोटा नागपुर एवं सिंह भूमि जिला से अंग्रेजों द्वारा मुंडा एवं हो जनजातियों को उनकी भूमि से बेदखल किए जाने से इस विद्रोह की नींव पड़ी हो जनजाति ने 1820 22 ईस्वी तक और 1831 ईस्वी में अंग्रेजी सेना का विद्रोह किया ।
- राजा जगन्नाथ जो बंगाल के पाराहार के तत्कालीन राजा थे, उन्होंने आदिवासियों की इस विद्रोह में भरपूर सहायता की मेजर रफ सेज कठोर कार्यवाही से इस विद्रोह का दमन कर दिया 18 से 74 में मुंडा विद्रोह शुरू हुआ, तथा 18 से 95 ईस्वी में बिरसा मुंडा द्वारा इस विद्रोह का नेतृत्व संभालने पर यह विद्रोह शक्तिशाली रूप से सामने आया ।
- इन्होंने 18 से 99 ईस्वी. में क्रिसमस की पूर्व संध्या पर इस विद्रोह की उद्घोषणा की जो सन् उन्नीस सौ में पूरे मुंडा क्षेत्र में आग की तरह फैल गया । सन् उन्नीस सौ में अंग्रेजों द्वारा बिरसा मुंडा को गिरफ्तार कर लिया । जहां राँची की जेल में हैजे से बिरसा मुंडा की मृत्यु हो गई।

कोल विद्रोह (1831)

- 1831 में छोटा नागपुर में यह कोल विद्रोह हुआ **इस विद्रोह का प्रमुख कारण कोल आदिवासियों की जमीन छीनकर मुस्लिम और सिख सम्प्रदाय के किसानों को दे दी ।**
- इस विद्रोह में गंगा नारायण और बुद्धो भगत ने भूमिका निभाई यह विद्रोह मुख्य रूप से रांची हजारीबाग पलामू मानभूम और सिंह भूमि क्षेत्र में फैला ।

- इस आंदोलन के प्रवर्तक 'जतरा भगत' थे, जिसे कभी बिरसा मुण्डा, कभी जमी तो कभी केसर बाबा के समतुल्य होने की बात कही गयी है।
- आंदोलन की शुरुआत 'मुण्डा आंदोलन' की समाप्ति के क़रीब 13 वर्ष बाद 'ताना भगत आंदोलन ' शुरू हुआ। **यह ऐसा धार्मिक आंदोलन था, जिसके राजनीतिक लक्ष्य थे।**
- यह आदिवासी जनता को संगठित करने के लिए नये 'पंथ' के निर्माण का आंदोलन था। ताना भगत आंदोलन में अहिंसा को संघर्ष के अमोघ अस्त्र के रूप में स्वीकार किया गया।
- बिरसा आंदोलन के तहत झारखंड में ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ संघर्ष का ऐसा स्वरुप विकसित हुआ, जिसको क्षेत्रीयता की सीमा में बांधा नहीं जा सकता था।
- **इस आंदोलन ने संगठन का ढांचा और मूल रणनीति में क्षेत्रीयता से मुक्त रहकर ऐसा आकार ग्रहण किया कि वह महात्मा गाँधी के नेतृत्व में जारी आज़ादी के 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ' का अविभाज्य अंग बन गया।**

<u>पहाड़ियाँ विद्रोह</u>

- 1770 के विद्रोह के दसक में राजमहल के पहाड़ी क्षेत्रों वर्तमान झारखंड में ब्रिटिश भू- राजस्व व्यवस्था के विरोध में पहाड़िया विद्रोह हुआ ।
- **आदिवासियों के छापामार संघर्ष से परेशान अंग्रेजी सरकार ने सन् 1778 में इनसे समझौता कर इनके क्षेत्र को दामिनी कोह क्षेत्र घोषित कर दिया ।**

<u>बस्तर का विद्रोह</u>

- **सन् 1910 में बस्तर के राजा के विरुद्ध जगदलपुर क्षेत्र में विद्रोह हुआ ।** जिसका दमन ब्रिटिश सेना ने किया ।
- **इस विद्रोह का मुख्य कारण वन अधिनियमों का क्रियान्वयन और सामन्ती करों का करारोपण था।**

- **<u>1857 ई. की क्रांति</u>**
- **कारण एवं परिणाम**
- 1857 ई. में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह आधुनिक भारतीय इतिहास की एक अभूतपूर्व तथा युगान्तकारी घटना है। भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना छल, धोखे और विश्वसघात से हुई थी ।
- भारत में जिस तरह ब्रिटिश सत्ता कायम हुई उस तरह इतिहास में और कोई सत्ता कायम नहीं हुई थी।

<u>विद्रोह का स्वरुप</u>

- 1857 के विद्रोह के संबंध में भिन्न भिन्न विचार देते हुए कुछ ने इसे साम्राज्यवादी विस्तार के कारण इसे सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी है । तो कुछ ने इसे दो धर्मों अथवा दो नस्लों का युद्ध बताया है ।
- सम्राज्यवादी विचार धारा के इतिहासकार सर जॉन लॉरेन्स व सर जॉन सीले ने सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी ।

<u>विद्रोह के लिए उत्तरदायी कारण</u>

- **गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग के शासनकाल की एक महत्त्वपूर्ण घटना 1857 का विद्रोह थी ।**
- इसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी और कई बार ऐसा प्रतीत होने लगा था कि भारत में अंग्रेजी राज्य का अन्त हो जायेगा यहाँ हम 1857 ई. के विद्रोह के महत्त्वपूर्ण कारणों का विश्लेषण करेंगे ।

<u>राजनीतिक कारण</u>

- अंग्रेज भारत में व्यापारी के रूप में आये थे, परन्तु धीरे-धीरे उन्होंने राज्य स्थापना तथा उसके विस्तार का कार्य आरम्भ किया । धीरे-धीरे **भारतीयों की राजनीतिक स्वतंत्रता का अपहरण होता गया और वे अपने राजनीतिक तथा उनसे उत्पन्न अधिकारों से वंचित होते गये ।**
- जिसके फलस्वरूप उनमें बड़ा असंतोष फैला, जिसका विस्फोट 1857 ई. के विद्रोह के रूप में हुआ। इस क्रांति के राजनीतिक कारण निम्नलिखित थे-

(1) <u>डलहौजी की साम्राज्यवादी नीतिः-</u>

- 1857 की क्रांति के लिए डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति काफी हद तक उत्तरदायी थी। **उसने विजय तथा पुत्र गोद लेने कई निषेध नीतियों द्वारा देशी राज्यों के अपहरण का एक कुचक्र चलाया ।** जिसने समपूर्ण भारत के देशी नरेशों को आतंकित कर दिया और उनके हृदय में अस्थिरता तथा आशंका का बीजारोपण कर दिया ।
- **लॉर्ड डलहौजी ने व्यपगत सिद्धांत या हड़प-नीति को कठोरता पूर्वक अपनाकर देशी रियासतों के निःसन्तान राजाओं को उत्तराधिकार के लिए दत्तक-पुत्र लेने की आज्ञा नहीं दी** और सतारा (1848), नागपुर (1853), झांसी (1854), बरार (1854), संभलपुर, जैतपुर, बघाट, अदपुर आदि रियासतों को कथनी के ब्रिटिश-साम्राज्य में मिला लिया । उसने 1856 ई. में अंग्रेजों के प्रति वफादार अदद रियासत को कुशासन के आधार पर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।
- उसने अवध के नवाब वाजिद अली शाह को गद्दी से उतर दिया । उसने तंजौर और कर्नाटक के नवाबों की राजकीय उपाधियां छीन ली ।
- मुग़ल बादशाह को नजराना देने के लिए अपमानित करना । सिक्कों पर नाम गुदवाने जैसी परम्परा को डलहौजी द्वारा समाप्त करना । आदि घटनाओं ने 1857 के विद्रोह को हवा दी ।

(2) <u>मुग़ल सम्राट के साथ दुर्व्यवहार</u> :-

- अंग्रेजों ने भारतीय शासकों के साथ दुर्व्यवहार भी किया । उन्होंने मुग़ल सम्राट को नजराना देना व सम्मान प्रदर्शित करना बन्द कर दिया इतना ही नहीं **लॉर्ड डलहौजी ने मुग़ल सम्राट की उपाधि को समाप्त करने का निश्चय किया ।**
- उसने बहादुरशाह के सबसे बड़े पुत्र मिर्जा जवाबख्त को युवराज स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और **बहादुरशाह**

से अपने पैतृक निवास स्थान लाल किले को खाली कर कुतुब में रहने के लिए कहा ।

(3) ब्रिटिश पदाधिकारियों के वक्तव्य-: डलहौजी की साम्राज्यदी नीति के साथ-साथ कुछ अंग्रेज अधिकारियों ने ऐसे वक्तव्य दिये जिससे देशी नरेश बहुत आतंकित हो गये और अपने भावी अस्तित्व के संबंध मे पूर्ण रूप से निराश हो उठे |

(4) नाना साहब और रानी लक्ष्मी बाई का असंतोष :-

- झांसी की रानी लक्ष्मी बाई तथा पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब अंग्रेजों के व्यवहार से बहुत नाराज थे।
- **अंग्रेजों ने झांसी के राजा-गंगाधर राव के दत्तक पुत्र दामोदर राव को उत्तराधिकार से वंचित करके झांसी राज्य को कथनी के राज्य में शामिल कर लिया था ।**
- इस अत्याचार को रानी लक्ष्मीबाई सहन न कर सकी और क्रांति के समय उसने विद्रोहियों का साथ दिया ।

(5) अवध का विलय और नवाब के साथ अत्याचार :-

- अंग्रेजों ने बलपूर्वक लखनऊ पर अधिकार करके नबाव वाजिद अली शाह को निर्वासित कर दिया था और निर्लज्जतापूर्वक महलों को लूटा था |
- बेगमों के साथ बहुत अपमानजनक व्यवहार किया गया था । इससे अवध के सभी वर्ग के लोगों में बड़ा असंतोष फैला और अवध क्रांतिकारियों का केन्द्र बन गया।

(6) प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था का विध्वंस :-

- अंग्रेजों की विजय के फलस्वरूप प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गई थी ।
- **ब्रिटिश शासन से पहले भारतवासी राज्य की नीति को पूरी तरह प्राभावित करते थे परन्तु अब वे इससे वंचित हो गये ।** अब केवल अंग्रेज ही भारतीयों के भाग्य के निर्माता हो गये ।

(7) अंग्रेजों के प्रति विदेशी भावना :-

- भारतीय जनता अंग्रेजों से इसलिए भी असन्तुष्ट थी क्योंकि वे समझते थे कि उनके शासक उनसे हजारों मील दूर रहते हैं । तुर्क, अफगान और मुग़ल भी भारत में विदेशी थे लेकिन वे भारत में ही बस गये थे और इस देश को उन्होंने अपना देश बना लिया था।
- जबकि अंग्रेजों ने ऐसा कोई काम नहीं किया था। अतः भारतीयों के हृदय और मस्तिष्क से अंग्रेजों के प्रति विदेशी की भावना नहीं निकल सकी थी ।

(8) उच्च वर्ग में असंतोष:- देशी राज्यों के नष्ट हो जाने से न केवल उनके नरेशों का विनाश हुआ जबकि उच्च वर्ग के लोगों की स्थिति पर भी बड़ा घातक प्रहार हुआ |

प्रशासनिक कारण-

(1) नवीन शासन-पद्धति को समझने में कठिनाई होना :-
भारतीय जिस शासन को सदियों से देखते आ रहे थे, वह समाप्त कर दिया गया था । नई शासन-पद्धति को समझने में उन्हें कठिनाई आ रही थी तथा, उसे वे शंका की दृष्टि से देखते थे ।

(2) भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं से अलग रखने की नीति :-

- अंग्रेजों ने शुरू से ही भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं में शामिल न कर भेद-भाव पूर्ण नीति अपनाई । लॉर्ड कार्नवालिस का भारतीयों की कार्य कुशलता और ईमानदारी पर विश्वास नहीं था । अतः उसने **उच्च पदों पर भारतीयों के स्थान पर अंग्रेजों को नियुक्त कर दिया ।**
- परिणामतः भारतीयों के लिए उच्च पदों के द्वार बन्द हो गये। यद्यपि 1833 ई. के कम्पनी के चार्टर एक्ट में यह आवश्वासन दिया गया था कि धर्म, वंश, जन्म, रंग या अन्य किसी आधार पर सार्वजनिक सेवाओं में भर्ती के लिए कोई भेदभाव नहीं बरता जाएगा, परन्तु अंग्रेजों ने इस सिद्धांत का पालन नहीं किया ।
- **सैनिक और असैनिक सभी सार्वजनिक सेवाओं में उच्च पद यूरोपियन व्यक्तियों के लिए ही सुरक्षित रखे गये थे।** सेना में एक भारतीय का सबसे बड़ा पद सूबेदार का होता था जिसे 60 या 70 रुपये प्रति माह वेतन मिलता था |
- असैनिक सेवाओं में एक भारतीय को मिल सकने वाला सबसे बड़ा पद सदर अमीन का था जिसे 500/ - रुपये प्रति माह वेतन मिलता था । उच्च पद देना अंग्रेज अपना एकाधिकार समझते थे।

(3) ब्रिटिश न्याय व्यवस्था से भारतीयों में असंतोष :-

- ब्रिटिश न्याय प्रशासन एक भिन्न प्रशासनिक व्यवस्था का प्रतीक था | विधि प्रणाली और सम्पत्ति अधिकार पूरी तरह से नये थे। न्याय प्रणाली में अत्यधिक धन तथा समय नष्ट होता था और फिर भी निर्णय अनिश्चित था |
- भारतीय इस न्याय व्यवस्था को पसन्द नहीं करते थे । अगर एक छोटा सा किसान भी किसी जमींदार की शिकायत करता था तो जमींदार को न्यायालय में जाना पड़ता था । इस प्रकार सम्मानित व्यक्ति अंग्रेजी न्यायालयों से असंतुष्ट थे ।

(4) दोषपूर्ण भू-राजस्व प्रणाली :-

- **भू-राजस्व प्रणाली को नियमित करने के नाम पर अंग्रेजों ने अनेक जमींदारों के पट्टों की छानबीन की । जिन लोगों के पास जमीन के पट्टे नहीं मिले, उनकी जमीनें छीन ली गई ।**
- बम्बई के प्रसिद्ध इमाम आयोग ने लगभग बीस हजार जागीरें जप्त कर ली थी । लॉर्ड बैंन्टिक ने तो माफी की भूमि भी छीन ली । इस प्रकार कुलीन वर्ग को अपनी सम्पत्ति व आय से हाथ धोना पड़ा ।
- **भूमि अपहरण की नीति के कारण तालुकेदारों में बड़ा असंतोष फैला और क्रांति में इन लोगों ने सक्रिय भाग लिया ।**
- किसानों के कल्याण एवं लाभ के नाम पर स्थाई बन्दोबस्त, रैयतवाड़ी व महलवाड़ी प्रणाली लागू की गई थी और हर बार किसानों से पहले की अपेक्षा अधिक लगान वसूल किया

उत्तर – A

प्रश्न-4. महात्मा गाँधी ने भारत में पहला आंदोलन किस स्थान से प्रारम्भ किया ?

A. चम्पारण B. सूरत
C. दांडी D. वर्धा
उत्तर – A

प्रश्न-5. गाँधीजी को किसानों का नेतृत्व करने के लिए चम्पारण में किसने आमंत्रित किया ?

A. राजेन्द्र प्रसाद B. बिन्देश्वरी प्रसाद
C. राजकुमार शुक्ल D. ब्रज किशोर
उत्तर – C

प्रश्न-6. गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन कब शुरू किया?

A. 1920 ई. B. 1930ई.
C. 1940ई. D. 1941ई.
उत्तर – A

प्रश्न-7. "भारत की खोज" के लेखक कौन हैं?

A. महात्मा गाँधी B. जवाहरलाल नेहरू
C. विवेकानंद D. रवींद्रनाथ टैगोर
उत्तर – B

प्रश्न-8. महात्मा गाँधी ने भारत छोड़ो आंदोलन कब आरंभ किया?

A. 1930 ई. B. 1942 ई.
C. 1940 ई. D. 1939 ई.
उत्तर – B

प्रश्न-9. भगत सिंह ने किस स्थान पर बम फेंका था?

A. अल्फ्रेड पार्क B. टाउन हॉल
C. कैंटोनमेंट हॉल D. सेंट्रल असेंबली
उत्तर – D

प्रश्न-10. महात्मा गाँधी को सर्वप्रथम "राष्ट्रपिता" किसने कहा?

A. जवाहर लाल नेहरू B. वल्लभ भाई पटेल
C. सी. राजगोपालचारी D. सुभाष चंद्र बोस
उत्तर – D

प्रश्न-11. बंगाल विभाजन किस वर्ष में रद्द कर दिया गया?

A. 1919 ई. B. 1909 ई.
C. 1913 ई. D. 1911 ई.
उत्तर – D

अध्याय – 4

स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्र निर्माण और पुनर्गठन

1945 -1947 के बीच का भारत

- वैवेल योजना - जून 1945
- आजाद हिंद फौज एवं लाल किला मुकदमा – नवम्बर 1945
- शाही भारतीय नौसेना विद्रोह –फरवरी 1946
- कैबिनेट मिशन – मार्च 1946
- ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली की घोषणा – 20 फरवरी 1947
- माउंटबेटन योजना – 3 जून 1947

वैवेल योजना (1945) -वायसराय वैवेल ने 1945 में एक राजनीतिक सुधार की योजना प्रस्तुत की जिसे वेवेल योजना के नाम से जाना जाता है।

- **इस योजना के अनुसार वायसराय के कार्यकारिणी का पुर्नगठन किया जाना था। इस उद्देश्य से राजनीतिक नेताओं को जेल से रिहा किया गया और जून 1995 में शिमला में एक सम्मेलन बुलाया गया।**
- ब्रिटिश सरकार इन राजनीतिक सुधारों के लिए इसलिए उत्साहित थी कि 1945 में इंग्लैण्ड में चुनाव होने वाले थे और वहाँ की सरकार यह प्रदर्शित करना चाहती थी कि वह भारत में समस्या समाधान के प्रति गंभीर है।

वैवेल योजना के अंतर्गत निम्नलिखित प्रावधान रखे गए :

(i) वायसराय एवं कमांडर-इन चीफ को छोड़कर वायसराय की कार्यकारिणी के सभी सदस्य भारतीय होंगे और परिषद् में हिंदू मुसलमानों की संख्या बराबर रखी जाएगी।

(ii) वायसराय वीटो पावर के प्रयोग का प्रयास नहीं करेगा।

- इस योजना के संदर्भ में मुस्लिम लीग चाहती थी कि उसे ही भारत मुसलमानों का एक मात्र दल माना जाए वायसराय की कार्यकारिणी में मुस्लिम लीग के बाहर का कोई मुसलमान नहीं होना चाहिए।
- दूसरी तरफ कांग्रेस ने इस सूची के लिए दो मुस्लिम सदस्यों- मौलाना आजाद एवं अब्दुलगफ्फार खाँ को नियुक्त किया जिसका जिन्ना ने विरोध किया। अतः वायसराय वैवेल ने जिन्ना की आपत्ति देखते हुए सम्मेलन को असफल घोषित कर समाप्त कर दिया।
- कांग्रेस ने जिन्ना के मत को इसलिए स्वीकार नहीं किया क्योंकि ऐसा करने से कांग्रेस एक साम्प्रदायिक दल अर्थात् हिंदू दल के रूप में जाना जाता और भारत के मुसलमानों का एकमात्र दल मुस्लिम लीग को माना जाता । इससे मुस्लिम लीग की भारत विभाजन की माँग और मजबूत हो जाती।

आजाद हिन्द फौज (भारतीय राष्ट्रीय सेना-INA) :-

- **INA की स्थापना 1942 में मोहन सिंह ने की थी।** जापानी मेजर फूजीवारा ने मोहन सिंह को इसके गठन का सुझाव दिया था । उन्होंने मोहन सिंह से कहा कि भारत की स्वतंत्रता के लिए जापानियों के साथ मिलकर कार्य करें ।

- वस्तुतः मोहन सिंह ब्रिटिश सेना में एक भारतीय सैन्यअधिकारी थे और जब ब्रिटिश सेना दक्षिण पूर्व एशिया से पीछे रह रही थी तो मोहन सिंह जापानियों के साथ हो गए। इसी क्रम में। सितम्बर 1942 को मोहन सिंह के अधीन मलाया में INA का गठन हुआ।
- **INA का दूसरा चरण उस समय आया जब सुभाष चन्द्र बोस 2 जुलाई 1943 में सिंगापुर पंहुचे और वहां से उन्होंने "दिल्ली चलो" का नारा दिया।** यहाँ क्रांतिकारी नेता रास बिहारी बोस ने उन्हें सहयोग दिया। अतः सुभाष चन्द्रबोस ने 21 अक्तूबर 1943 आजाद हिंद फौज के नाम से एक अस्थायी सरकार का गठन किया। इसका मुख्यालय सिंगापुर के साथ-साथ रंगून(म्यांमार) में भी बनाया गया।
- बोस की सरकार ने Uk और USA के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और गाँधी, नेहरू एवं सुभाष नामक सैन्य टुकड़ी का गठन किया तो **महिलाओं के लिए रानी झाँसी रेजिमेंट का गठन किया।**
- 6 जुलाई 1944 में सुभाष चन्द्र बोस ने एक रेडियो संदेश में कहा कि भारत की स्वतंत्रता के लिए अंतिम युद्ध शुरू हो चुका हमारे राष्ट्रपिता भारतीय स्वतंत्रता के इस युद्ध में हमें आपका आशीर्वाद चाहिए।
- शहनवाज खान के नेतृत्व में INA की सैन्य टुकड़ी जापानियों के साथ मिलकर भारत - बर्मा सीमा पर हमला करने के लिए इंफाल भेजी गयी किंतु जब जापानियों की विश्व युद्ध में पराजय होने लगी तब उनके साथ-साथ आजाद हिंद फौज के सैनिकों को भी आत्मसमर्पण करना पड़ा और उन पर मुकदमा चला।

<u>लाल किला मुकदमा (नवम्बर 1945)</u>:

- आजाद हिंद फौज के बंदी सैनिकों पर ब्रिटिश सरकार द्वारा लाल किले में मुकदमा चलाया गया। फ़ौज के शाहनवाज खान, गुरुबख्श सिंह ढिल्लो एवं प्रेम कुमार सहगल को एक ही कठघरे में खड़ा किया गया।
- नेहरू ने सरकार से इन गुमराह देश भक्तों के प्रति उदारता दिखाने की अपील की। इसी क्रम में कांग्रेस ने सैनिकों के बचाव हेतु एकआजाद हिंद फौज समिति का गठन किया।
- लाल किले मुकदमे में बचाव पक्ष का नेतृत्व 'भूलाभाई देसाई' कर रहे थे। नेहरू ने इस मुकदमे के दौरान 25 वर्ष पश्चात् काली कोट पहनी।
- लाल किले मुकदमे के संदर्भ में कैदियों को सभी राजनीतिक दलो जैसे - कांग्रेस, मुस्लिम लीग, कम्युनिस्ट पार्टी आदि का समर्थन प्राप्त था। मुकदमे के दौरान जनता ने सक्रिय भूमिका निभायी देश भर में हड़ताल और प्रदर्शन का आयोजन किया गया। समाचार पत्रों में लेख लिखे गए।
- आजाद हिंद सप्ताह (11 नवम्बर) को आयोजन किया गया तथा **12 नवम्बर 1945 को आजाद हिंद दिवस मनाया गया।**
- इसी तरह **अखिल भारतीय महिला सम्मेलन में इन युद्ध बंदियों को रिहा करने की मांग की गयी।** साथ ही, सरकारी कर्मचारी एवं सेना के लोग भी सरकार के विरुद्ध हो गए। वे सरकार विरोधी सभाओं में जाते थे और चंदा भी देते थे।
- मुकदमे के संदर्भ में आंदोलन में भारतीय जनता के राष्ट्रवाद का परिपक्व रूप दिखाई पड़ा। वस्तुतः भारत बनाम इंग्लैण्ड का मुद्दा स्पष्ट हो गया और भारतीय का आंदोलन पूर्णतः आजादी के रंग में रंगने लगा। अतः सरकार ने भी घोषणा की कि उन्हीं कैदियों पर मुकदमा चलेगा जिस पर बर्बरता एवं हत्या का आरोप है।
- आजाद हिंद फौज के कैप्टन अब्दुल रशीद को 7 वर्ष की सजा दिए जाने के विरोध में प्रदर्शन हुआ जिसका नेतृत्व मुस्लिम लीग के छात्रों ने किया। इसमें कांग्रेस एवं कम्युनिस्ट पार्टी के छात्र संगठन भी शामिल हुए।

<u>शाही भारतीय नौसेना विद्रोह (18 फरवरी 1946)</u> - बाम्बे बंदरगाह पर खड़े हुए नौसैनिक प्रशिक्षण जहाज 'तलवार पर नाविकों ने ब्रिटिश नस्लवादी व्यवहार एवं सुविधाओं में कमी के मुद्दे पर ब्रिटिश सरकार का विरोध किया। इसी क्रम में नाविक पी.सी दत्त ने'तलवार' की दीवारों पर अंग्रेजों भारत छोड़ों लिख दिया।

- फलतः उन्हें गिरफ्तार किया गया। इसी क्रम में द शाही नौसेना के नाविकों ने सरकार से उन्हें रिहा करने की मांग की तो साथ ही आजाद हिंद फौज के बंदियों की रिहाई एवं इण्डोनेशिया से भारतीय सैनिकों के वापसी की मांग की शीघ्र ही यह विद्रोह अन्य जहाजों पर भी फैल गया और नाविकों ने सरकारी आदेश को मानने से इंकार कर दिया। यह विद्रोह 1857 के विद्रोह की याद ताजा करता है।
- वस्तुतः 1857 का विद्रोह भी नागरिक असंतोष को व्यक्त करता है जिसकी शुरुआत सैन्य छावनी से सैनिक असंतोष के रूप में हुई थी और इसमें सैनिकों के साथ-साथ बड़ी संख्या में असैनिक भी सम्मिलित राष्ट्रीय चेतना से मुक्त न होते हुए भी यह विद्रोह राष्ट्रीय चेतना के विकास में अपनी भूमिका निभाता है। इस दृष्टि से इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की कोटि में रखा जाता है।
- इस विद्रोह के पश्चात् भारत से कम्पनी शासन की समाप्ति कर दी गयी और भारत में क्राउन का शासन स्थापित हुआ। अब सरकार ने अपनी नीतियों में परिवर्तन करते हुए विलय और विस्तार की नीति त्याग दिया। इस तरह सरकार की नीतियों में परिवर्तन के लिए 1857 का विद्रोह ऐतिहासिक मोड़ साबित हुआ।
- इसी तरह, शाही भारतीय नौसैनिक विद्रोह भी जन असंतोष की अभिव्यक्ति था। नस्लवादी व्यवहार एवं निम्न स्तर की सुविधाएँ इस विद्रोह का तात्कालिक कारण था। सैनिकों से शुरू हुए इस विद्रोह में जगह-जगह असैनिक समूह भी सरकार विरोधी कार्यक्रम में शामिल होते गए।
- यह विद्रोह राष्ट्रवाद की परिपक्व अवस्था को सूचित करता है। इस विद्रोह के उपरांत सरकार ने कैबिनेट मिशन माध्यम से भारतीयों द्वारा निर्मित एक संविधान सभा और अंतरिम सरकार के गठन की घोषणा की। तत्पश्चात् भारत की आजादी सामने आयी।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्तूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (Ist Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
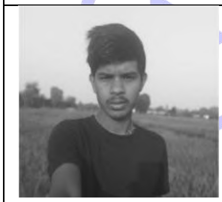	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.-Biramganj, Dis.-Raisen, MP
N.A.	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A.	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A.	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A.	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A.	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A.	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A.	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
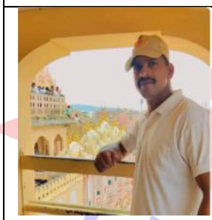	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A.	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A.	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/ua8u6t

Online order करें – http://surl.li/pclyv

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE